

इन्टरव्यू-३

प्र: आपका नाम क्या है ?

ज: मेरा नाम अफसाना खातून है।

प्र: आपकी उम्र क्या है ?

ज: मेरी उम्र 13 वर्ष है।

प्र: आप पढ़ने जाती हो ?

ज: जी नहीं, मैं पढ़ने नहीं जाती।

प्र: आप पहले जाती थीं ?

ज: जी हां मैं पहले जाती थी।

प्र: आप कहां तक पढ़ी हैं ?

ज: मैं आठ तक पढ़ी हूं।

प्र: तुम्हें बुनाने का काम आता है या कढ़ाई का या पूरी साड़ी बुनने आती है ?

ज: मुझे केवल कढ़ाने का काम आता है।

प्र: तुम्हें बुनाने का काम नहीं आता ?

ज: नहीं, थोड़ों बहुत कर लेते हैं।

प्र: करघा चलाना आता है ?

ज: हाँ, करघा चलाना आता है।

प्र: बचपन से ही तुम सीख रही हो ?

ज: हाँ, मैं बचपन से ही सीख रही हूं।

प्र: बुनकरों में और भी लड़किया हैं जो तुम्हारी तरह है उन्हें करघा चलाना आता है ?

ज: हाँ।

प्र: सभी लड़कियों को करघा चलाना आता है ?

ज: नहीं कुछ को। जहाँ लोग कढ़ाई के लिए बच्चे कम रखते हैं वहाँ के लोग जानते हैं।

प्र: रोज तुम यहाँ करघा चलाती हो ?

ज: नहीं, जब लोग आते नहीं तब करते हैं, जब कोई बीमार पड़ जाते हैं।

प्र: तुम्हें अच्छा लगता है कि काम समझ के करती हो ?

ज: काम समझ के करते हैं, अच्छा क्या लगेगा, ऊपर का काम भी करना पड़ता है।

प्र: घर का भी पूरा काम करती हो ?

ज: हां घर का काम भी करती हूं।

प्र: और तानी भरने का काम तो करती ही होगी ?

ज: हां, तानी भरने का काम भी करती हूं।

प्र: घर में कौन-कौन हैं ?

ज: घर में मेरी अप्पी है अम्मी है।

प्र: वो लोग भी काम करती हैं ?

ज: नहीं अप्पी नहीं जानती।

प्र: और कौन-कौन करघा चलाना जानता है ?

ज: हम और अम्मी करघा चलाना जानते हैं।

प्र: अच्छा तो अम्मी करघा नहीं चलाती ?

ज: अम्मी करघा चलाती हैं जब कोई नहीं आया या जब दो लोग नहीं आये तब।

प्र: कभी पूरी साड़ी बनाई है तुमने ?

ज: नहीं, पूरी साड़ी नहीं बनाई।

प्र: अच्छा थोड़ी-थोड़ी बनाई हो ?

ज: हां बनाई है।

प्र: अच्छा जब कोई नहीं आता तब तुम साड़ी बनाने का काम करती हो तो तब तुम्हारे घर वाले काम को महत्व देते हैं कि नहीं ?

ज: हां महत्व देते हैं।

प्र: लोग आते है तो तारीफ करते हैं ?

ज:

प्र: तुम्हारे बाद जो ये छोटी लड़कियाँ है इन्हें सिखाया जाता है कि नहीं ?

ज: अभी तो ये पढ़ने जाती है तो अभी दोनों टाईम, समय ही नहीं मिलता इनको थोड़ा समय जो मिला खेलने में लग जाती हैं।

प्र: अच्छा तुमने जो ये कढ़ाने का काम मन से सीखा या सिखाया गया ?

ज: शौक से सीखा है।

प्र: तुमको और पढ़ने को मन करता है ?

ज: हां पढ़ने का मन तो करता है।

प्र: और बुनकारी करने का मन करता है ?

ज: नहीं, पहले हम साड़ी कढ़ाते थे फिर जाल बनाते थे।

प्र: बाहर का काम करती थी तो पैसा मिलता था ?

ज: हां मिलता था।

प्र: अब भी काम करती हैं ?

ज: नहीं, काम मिल ही नहीं रहा है, काम ही नहीं है तो मिलेगा कहाँ से।

प्र: और मिलता है तो करती हो काम बाहर का ?

ज: हां, करती हूँ।

प्र: क्या-क्या काम मिलता है ?

ज: इस मर्तबा तो कुछ नहीं है जो मिलता है जैसे ये मेरे मामा के यहाँ से आई है इसमें कतरना रहता है बस वही कर लेते हैं।

प्र: बनारसी साड़ी कभी पहनी हो ?

ज: हां, शादी में या मामा के यहाँ, शादी में जाते है शादी में तब पहनते हैं। जब पुरानी हो जाती है जो चलती नहीं।

प्र: ज्यादातर घरों में तो नहीं सिखाया जाता होगा ?

ज: हां जहाँ कम बच्चे हो, और जहाँ पढ़ने ही नहीं भेजते।

प्र: अच्छा तो वहाँ बुनकारी नहीं सीखाते ?

ज: हां

प्र: बुनकारी छोटी करघा भी नहीं सीखाते होंगे ?

ज: हां